ISSN 0975-8321

वाङ्मय

(त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका)

Peer Reviewed Journal
(Impact Factor 5.125)

सम्पादक
डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद

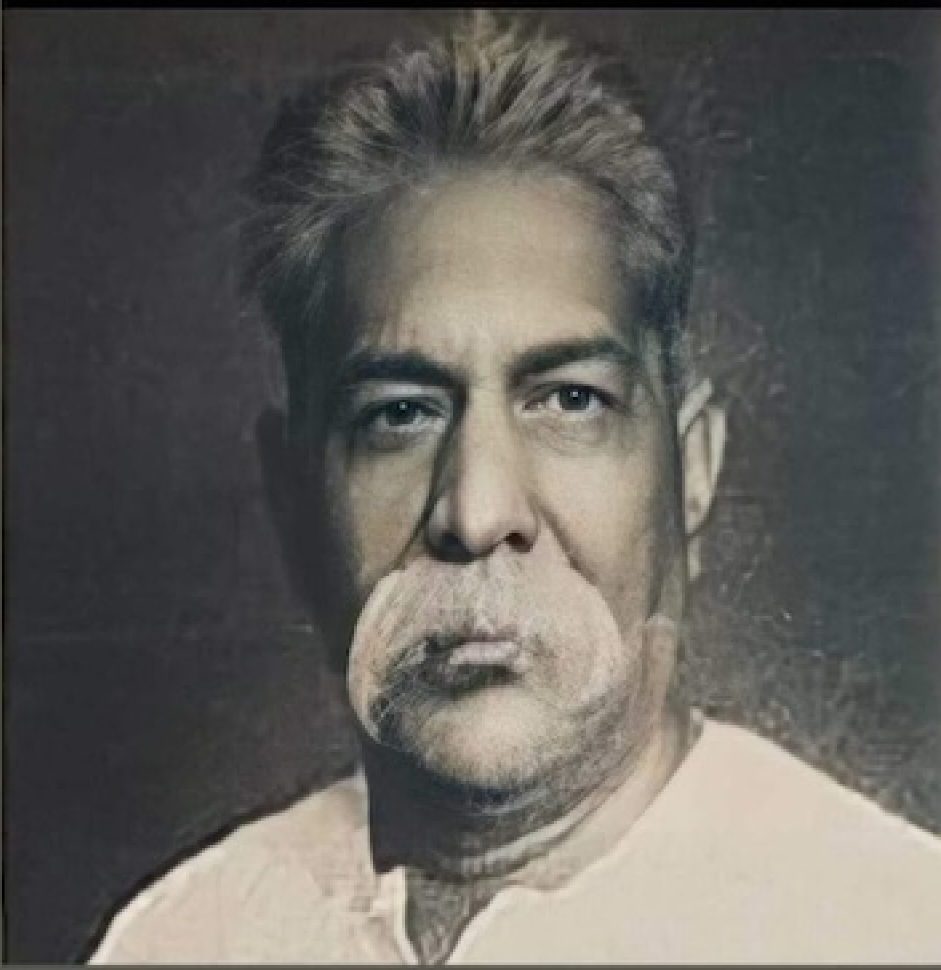

द्विवेदी युग के साहित्यकार ज़हूर बख़्श

ISSN 0975-8321

वाङ्मय त्रैमासिक

वर्ष : 22 **जनवरी–सितम्बर (संयुक्तांक) 2024**

सम्पादक
डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद
मोबाइल : 9044918670

सलाहकार सम्पादक
प्रो. मेराज अहमद
(ए.एम.यू. अलीगढ़)

परामर्श मण्डल
प्रो. रामकली सराफ(वाराणसी)
डॉ. शगुफ़्ता नियाज़ (अलीगढ़)

सम्पादकीय सम्पर्क
205- फेज-1, ओहद रेजीडेंसी,
नियर पान वाली कोठी,
दोदपुर रोड, सिविल लाइन, अलीगढ़-202002
मोबाइल : 7007606806
E-mail : vangmaya@gmail.com

इस अंक का मूल्य–275/–

सहयोग राशि :
द्विवार्षिक शुल्क व्यक्तिगत/संस्थाओं के लिए : 800 रुपए

सह–सम्पादक
डॉ. मोहम्मद आसिफ खान

पुनरावलोकन समिति :
- प्रो. मेराज अहमद, हिन्दी विभाग, ए.एम.यू. अलीगढ़
- प्रो. इकरार अहमद, प्राचार्य, विवेकानंद ग्रामद्योग महाविद्यालय, दिबियापुर, औरैया

कानूनी सलाहकार
एम. एच. खान, एडवोकेट(हाईकोर्ट, इलाहाबाद)
एम. ए. खान, एडवोकेट(हाईकोर्ट, इलाहाबाद)

सम्पादन/संचालन
अनियतकालीन, अवैतनिक और अव्यावसायिक।
रचनाकार की रचनाएँ उसके अपने विचार हैं।
रचनाओं पर कोई आर्थिक मानदेय नहीं दिया जाएगा।
लेखकों, सदस्यों एवं मित्रों के आर्थिक सहयोग से पत्रिका प्रकाशित होती है।
उनसे सम्पादक-प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र अलीगढ़ होगा।

रचनाकारों से......

○ रचनाएँ कृतिदेव 10 में टाइप कराकर ही भेजें। ○ रचनाओं के साथ पोस्टकार्ड होने पर ही प्राप्ति की सूचना भेजी जाएगी। ○ डाक टिकट लगा लिफाफा साथ आने पर ही अस्वीकृति रचना लौटायी जा सकती है अन्यथा नष्ट कर दी जाएगी। ○ कृतियों की समीक्षा के लिए पुस्तक की दो प्रतियाँ भेजना अनिवार्य है। ○ नमूना प्रति अवलोकन के लिए 300 रुपये भेजना अनिवार्य है। ○ हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं की रचनाओं का वाङ्मय स्वागत करता है।

शुल्क भेजने का पता

मनीआर्डर या बैंक ड्राफ़्ट : *'डॉ. फ़ीरोज़ अहमद' या 'वाङ्मय'* के नाम

205- फेज-1, ओहद रेजीडेंसी, नियर पान वाली कोठी, दोदपुर रोड, सिविल लाइन, अलीगढ़-202002

डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद की ओर से डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद द्वारा प्रकाशित, डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद द्वारा मुद्रित तथा नवमान आफसेट प्रिंटर्स अलीगढ़ में मुद्रित एवं ई-3, अब्दुल्लाह क्वाटर्स, लाल बहादुर शास्त्री मार्ग अलीगढ़ से प्रकाशित।

सम्पादक- डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद

सम्पादकीय

हिंदी साहित्य के आरंभिक दौर में अब्दुल रहमान, अमीर खुसरो आदि की विशिष्टता आज भी अक्षुण्ण है। इसी तरह भक्तिकाल में गोस्वामी तुलसीदास और महाकवि सूरदास के समानांतर मलिक मोहम्मद जायसी और कबीर का स्थान सुरक्षित है। रीतिकाल में भी अनेक मुस्लिम रचनाकार सक्रिय थे। हिंदी का आरंभिक समय अब्दुल रहमान तथा अमीर खुसरो के बिना और मध्यकाल कबीर तथा जायसी के बिना सूना-सूना ही रहेगा। परंतु आधुनिक काल के परिदृश्य में मुस्लिम समुदाय से संपृक्त रचनाकारों का कोई विशेष लेखा-जोखा नहीं मिलता। कुछ एक नाम अगर ढूँढ़ के लाए भी जाएँ तो वह ऐसे ही होंगे जो कि हाशिए के भीतर नहीं रखे जा सकते हैं। दरअसल सन् 1947 यानी कि आजादी मिलने के समय तक का साहित्यिक परिदृश्य में मुसलमानों की हिन्दी साहित्य में सृजनात्मक उपस्थिति नगण्य-सी रही है। इसके अनेक कारण हो सकते हैं जिन पर विस्तारपूर्वक विचार किया जाना आवश्यक है। यद्यपि आजादी के बाद के साहित्यिक पटल पर फिर एक बार मुस्लिम रचनाकारों की उपस्थिति दिखाई देती है। इन परिस्थितियों और उनके कारणों की छानबीन इसलिए आवश्यक है कि ये सब साहित्यकार भी हिन्दी साहित्य की ही धरोहर हैं। कोई भी साहित्यिक परिदृश्य इनके बिना पूर्ण नहीं हो सकता है।

द्विवेदीकालीन प्रख्यात् साहित्यकार ज़हूर बख़्श ने अपनी कहानियों और लेखों से हिंदी साहित्य जगत् में सम्मानजनक स्थान प्राप्त किया। उन्होंने 300 से अधिक बाल कहानियाँ, सौ से अधिक कहानियाँ, तीन-चार उपन्यास और एक हजार से अधिक आलेख का सृजन किया था। सामाजिक पुनर्जागरण पर आधारित उनके आलेखों का संदेशप्रद और प्रेरणादायक रहे हैं। 12 मई सन् 1897 को मध्य प्रदेश के सागर जिले में जन्मे ज़हूर बख़्श का नाम हिन्दी साहित्य जगत् में बड़े ही आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है। बाल साहित्य में भी वे एक जाना-पहचाना नाम रहे हैं। बच्चों को केन्द्रित करके उन्होंने अनेक कहानियाँ लिखीं। आजीवन वे अध्यापन कर्म से ही जुड़े रहे, इसीलिए उनके द्वारा लिखे गए बाल साहित्य में बाल मनोविज्ञान का पक्ष उल्लेखनीय है। पंडित कामताप्रसाद गुरु आपके अध्यापक रहे थे जिस कारण हिन्दी भाषा और व्याकरण के सन्दर्भ में आपकी रुचि स्वाभाविक ही थी। हिन्दी भाषा और लिपि की वैज्ञानिकता से संबंधित आपके कार्य को आज भी याद किया जाता है। तत्कालीन समय की सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में आप प्रकाशित होते रहे। द्विवेदी युग की साहित्यिक नैतिकता और

सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक और सांप्रदायिक सद्‌भावना के संवाहक के रूप में ज़हूर बख़्श का नाम उल्लेखनीय है। ज़हूर बख़्श का अध्ययन हिन्दी के साथ-साथ उर्दू-फ़ारसी भाषाओं में भी रहा। उन्होंने सदैव हिन्दी भाषा को ही सर्वोपरी स्थान दिया और आजीवन उसके अनन्य सेवक रहे। हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्थान देने वाले आरंभिक साहित्यकारों में ज़हूर बख़्श का नाम भी आदर के साथ लिया जाता है। द्विवेदी युग में अनेक साहित्यकार साहित्य सृजन में सक्रिय थे परंतु इस काल में मुस्लिम साहित्यकारों की संख्या नगण्य रूप में ही सामने आती है। आज़ादी मिलने तक मुस्लिम साहित्यकारों की संख्या उँगलियों पर गिनने लायक ही है। ऐसे दौर में ज़हूर बख़्श का अनवरत रूप से अपने रचनाकर्म में रत रहना और न केवल रत रहना अपितु विभिन्न प्रकार के सामाजिक-सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहलुओं पर बेबाकी से कलम चलाना एक विरल उदाहरण ही कहा जाएगा। ज़हूर बख़्श मुस्लिम समाज से थे परंतु उससे पहले वह एक भारतीय आत्मा थे। मुस्लिम समाज के अनेक नकारात्मक पक्षों पर भी उन्होंने निर्भीकता से कलम चलाई थी। अपनी इसी सुधारवादी सोच के करण जीवन में उन्हें कई बार समस्याओं का सामना भी करना पड़ा परंतु ज़हूर बख़्श समाज की चिनगारियों से कभी डरे नहीं बल्कि अपनी अग्निधर्मा लेखनी से समाज की संकीर्ण सोच पर कुठाराघात करते रहे।

ज़हूर बख़्श ने अपनी कहानियों और विचारपरक लेखों के माध्यम से हिंदी साहित्य जगत् में अपना एक विशेष स्थान निर्धारित किया। परन्तु इसे दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि अपने समय में वह अपना समस्त साहित्य प्रकाशित नहीं करवा सके। उनका अधिकांश साहित्य विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में ही प्रकाशित हुआ, पुस्तकाकार रूप में नहीं आ पाया। जिस सामासिक संस्कृति से भारतवर्ष की पहचान है, वे उसी सामासिक संस्कृति के सफल संवाहक थे। इसीलिए उनके कृतित्त्व में हमें हिन्दू-मुस्लिम एकता, नैतिकता, राष्ट्रप्रेम और समन्वयवादी चेतना के दर्शन होते हैं। द्विवेदी युग के जितने भी साहित्यकार थे, उनमें ज़हूर बख़्श सम्भवतः अकेले ऐसे मुस्लिम साहित्यकार थे जिन्हें आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी की 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित होने का अनेक बार सौभाग्य मिला। यह उनका अध्ययन और चिंतन ही था जिसके बल पर वे संपूर्ण भारतवर्ष में प्रसिद्ध हुए।

'वाङ्मय' पत्रिका मुस्लिम साहित्यकारों, जो आज गुमनामी में चले गए हैं, को सामने लाने का प्रयास पिछले कई वर्षों से कर रही है। प्रस्तुत अंक साहित्यकार ज़हूर बख़्श पर केन्द्रित है। इसमें क्षेमचन्द्र सुमन, डॉ. बलभद्र तिवारी, परमानंद पांचाल, अहमद अली सिद्‌दीकी आदि के आलेख उनके व्यक्तित्व पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हैं। इस अंक में ज़हूर बख़्श द्वारा लिखी गई कुछ कहानियों और आलेखों का संकलन भी किया गया है जिसे एक बानगी के तौर पर देखा जाना चाहिए। आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सम्पादक

अनुक्रम

सम्पादकीय/3

खण्ड-क (आलोचना/संस्मरण)

1. ज़हूर बख़्श जी का परिचय/9
क्षेमचन्द्र 'सुमन'
2. बाल साहित्य का निर्माण/11
ज़हूर बख़्श
3. मुसलमानों और ईसाइयों में हिंदी-प्रेम प्रवर्तन के उपाय/30
ज़हूर बख़्श
4. मुस्लिम महिलाओं की हिंदी-सेवा/34
ज़हूर बख़्श
5. मुसलमानों की बोलचाल की भाषा/44
ज़हूर बख़्श
6. हिन्दू-स्त्रियों में इस्लाम का प्रचार/48
सन्तराम, बी.ए.
7. एक वेश्या की आत्म-कथा/63
ज़हूर बख़्श
8. समाज की मुर्दादिली/76
ज़हूर बख़्श
9. पशु से भी अधम/87
ज़हूर बख़्श

10. कम खाना, सागर में रहना और पढ़ना-लिखना-पढ़ाना अर्थात् ज़हूर बख़्श/100
डॉ. बलभद्र तिवारी
11. हिन्दी के अनन्य सेवक ज़हूर बख़्श जी/109
परमानन्द पांचाल
12. बिनु गुरु मिलै न ज्ञान/112
ज़हूर बख़्श
13. हिंदी बाल-साहित्य के प्रख्यात लेखक ज़हूर बख़्श : कुछ यादें/116
अहमद अली सिद्दीकी
14. सेवा-धर्म/122
ज़हूर बख़्श
15. दिव्य दर्शन/126
ज़हूर बख़्श
16. स्त्री की पराधीनता/134
ज़हूर बख़्श
17. अब क्या करूँ?/140
ज़हूर बख़्श
18. दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी?/152
ज़हूर बख़्श
19. जो टूट गए, पर झुके नहीं/154
ज़हूर बख़्श
20. बड़े भैया/161
ज़हूर बख़्श
21. मानस की प्रख्यात विनायकी की टीका के प्रेणता राव 'नायक'/167
ज़हूर बख़्श
22. स्वर्गीय सैयद अमीर अली साहब 'मीर'/173
ज़हूर बख़्श
23. स्वर्गीय 'मीर' साहब की पत्नी/189
ज़हूर बख़्श

24. पंडित रघुवरप्रसाद द्विवेदी/195
ज़हूर बख़्श
25. स्वर्गीय ज़हूर बख़्श/202
नर्मदाप्रसाद त्रिपाठी
26. स्व. ज़हूर बख़्श!/205
रामानुज लाल श्रीवास्तव
27. ज़हूर बख़्श जी/211
रमेश गुप्त
28. ज़हूर बख़्श की अन्तिम यात्रा/215
अहमद अली सिद्दीकी
29. स्व. ज़हूर बख़्श : वह 'सागर के प्रेमचंद' कहलाते थे/218
अहमद अली सिद्दीकी
30. हसन-बिन-सब्बाह/221
ज़हूर बख़्श (अनु.)

खण्ड-ख (कहानी/बाल कहानी/बाल कविता)

31. खुदकुशी/238
ज़हूर बख़्श
32. कयामत के इंतिज़ार में/247
ज़हूर बख़्श
33. बुधिया/257
ज़हूर बख़्श
34. हम भंगी है/267
ज़हूर बख़्श
35. हवा का रुख़/278
ज़हूर बख़्श
36. हारजीत/285
ज़हूर बख़्श

37. ज़हूर बख़्श/299

भीष्म साहनी

38. परमिट की शक्कर/306

ज़हूर बख़्श

39. मैं झूठ न बोलूँगी/310

ज़हूर बख़्श

40. यह तो तुमने बहुत बुरा किया/312

ज़हूर बख़्श

41. तुमने देश की लाज रख ली/314

ज़हूर बख़्श

42. चित्रकार/317

ज़हूर बख़्श

43. चुभती भूल/319

ज़हूर बख़्श

44. खाँसी क्यों आने लगी?/321

ज़हूर बख़्श

45. परम आनंद का क्षण/323

ज़हूर बख़्श

46. बढ़ई/204

ज़हूर बख़्श

1

ज़हूर बख़्श जी का परिचय

क्षेमचन्द्र 'सुमन'

ज़हूर बख़्श का जन्म 12 मई सन् 1897 को सागर (मध्यप्रदेश) के मछरयाही नामक स्थान में हुआ था। आपकी प्रायः सारी शिक्षा-दीक्षा जबलपुर में हुई थी और वहाँ के नॉर्मल स्कूल से विधिवत् ट्रेनिंग करके सागर के प्राइमरी स्कूल में हिन्दी अध्यापक नियुक्त हुए थे। आपने जीवन-भर अध्यापन का कार्य किया और बच्चों के मनोविज्ञान के अनुसार उनके लिए शिक्षाप्रद रचनाएँ ही लिखते रहे। जिन दिनों आप जबलपुर में विद्याध्ययन किया करते थे उन दिनों वहाँ के नार्मल स्कूल में प्रख्यात वैयाकरण श्री कामताप्रसाद गुरु आपके शिक्षक थे। गुरु जी का आप पर अनन्य स्नेह था और उनके प्रोत्साहन से ही आप हिन्दी-लेखन की ओर उन्मुख हुए थे। व्याकरण-सम्मत, शुद्ध हिन्दी लिखने के कारण ज़हूर बख़्श उनके अत्यन्त प्रिय शिष्य हो गए थे और जब उन्होंने हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया तो गुरु जी ने उन्हें बहुत प्रोत्साहित किया था। जिन दिनों ज़हूर बख़्श जबलपुर में अपने साहित्यिक जीवन का प्रारम्भ कर रहे थे उन दिनों आपका सम्पर्क वहाँ के अनेक शीर्षस्थ शिक्षकों तथा साहित्य-सुधियों से हो गया था। इस सम्पर्क ने आपके साहित्यकार को और भी प्रोत्साहित किया था। सन् 1912 में आपने मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण करके 1913 में नार्मल की ट्रेनिंग प्राप्त की थी और उसी वर्ष सागर नगर पालिका की पाठशाला में शिक्षक हो गए थे और सन् 1948 तक इसी कार्य में संलग्न रहे थे।

प्रारम्भ से ही शिक्षक होने के कारण आपको बाल मनोविज्ञान का अत्यन्त सहज ज्ञान हो गया था और उनके मानसिक स्तर के अनुरूप आप कहानी लिखने में अत्यन्त सफल सिद्ध हुए थे। आपने पौराणिक, ऐतिहासिक और धार्मिक कहानियों के लेखन के क्षेत्र में अद्वितीय सफलता प्राप्त की थी। आपके द्वारा लिखित अनेक पाठ्य-पुस्तकें उन दिनों मध्यप्रदेश के शिक्षा विभाग में अत्यधिक लोकप्रिय थी। फ़ारसी के प्रख्यात साहित्यकार शेखसादी की 'गुलिस्ताँ' तथा 'बोस्तां' नामक कृतियों का हिन्दी अनुवाद भी आपने बड़े परिश्रम और लगन के साथ किया था। बुन्देलखण्डी बोली में रचना करने की दिशा में भी आपने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की थी। आपने यद्यपि मुख्यतः बालोपयोगी साहित्य-रचना को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया था किन्तु प्रौढ़ रचनाएँ करने में भी आप किसी से पीछे नहीं थे। सामाजिक पृष्ठभूमि पर उत्कृष्ट मनोवैज्ञानिक